5 पंच परमेश्वर

- परिचयात्मक प्रश्न - घर में बूढ़े बुजुर्गों का सम्मान किस प्रकार रखा जाता है?
  - क्या लालचवश उनका सम्मान किया जाना चाहिए?
  - क्या लालच पूरा होने के बाद उनका अपमान करना चाहिए?
- प्रतिबिंब - बालकों को बुजुर्गों के प्रति निष्कपट भाव से सेवा करने के भावों को जाग्रत करना।
- परिकल्पना - क्या आपने जुम्मन शेख की बुजुर्ग खाला की कहानी सुनी है?

जुम्मन शेख और अलगू चौधरी में गाढ़ी मित्रता थी। साझे में खेती होती थी। कुछ लेन-देन में भी साझा था। एक को दूसरे पर अटल विश्वास था। जुम्मन जब हज करने गए थे, तब अपना घर अलगू को सौंप गए थे और अलगू जब कभी बाहर जाते, तो जुम्मन के भरोसे अपना घर छोड़ देते थे। इस मित्रता का जन्म उसी समय हुआ था, जब दोनों बालक ही थे और जुम्मन के पिता जुमराती उन्हें शिक्षा प्रदान करते थे।

जुम्मन शेख की एक बूढ़ी खाला थी। उनके पास थोड़ी-सी जायदाद थी परन्तु उनके निकट संबंधियों में कोई न था। जुम्मन ने लंबे-चौड़े वायदे करके वह जायदाद अपने नाम लिखवा ली थी।

जब तक दानपत्र की रजिस्ट्री नहीं हुई, तब तक खाला की खूब खातिरदारी हुई स्वादिष्ट पदार्थ खिलाए गए। रजिस्ट्री की मुहर लगते ही इस खातिरदारी पर भी मुहर लग गई। जुम्मन की पत्नी करीमन रोटियाँ देने के साथ कड़वी बातें भी सुनाने लगी। जुम्मन शेख भी निठुर हो गए।

कुछ दिन खाला ने सब सुना और सहा, पर जब न सहा गया तब जुम्मन से शिकायत की। जुम्मन ने गृहस्वामिनी के प्रबंध में दखल देना उचित न समझा।

कुछ दिन तक और यों ही रो-धोकर काम चलता रहा। अंत में एक दिन खाला ने कहा, "बेटा, तुम्हारे साथ मेरा निबाह न होगा। तुम मुझे रुपए दे दिया करो, मैं अलग पका-खा लूँगी।"

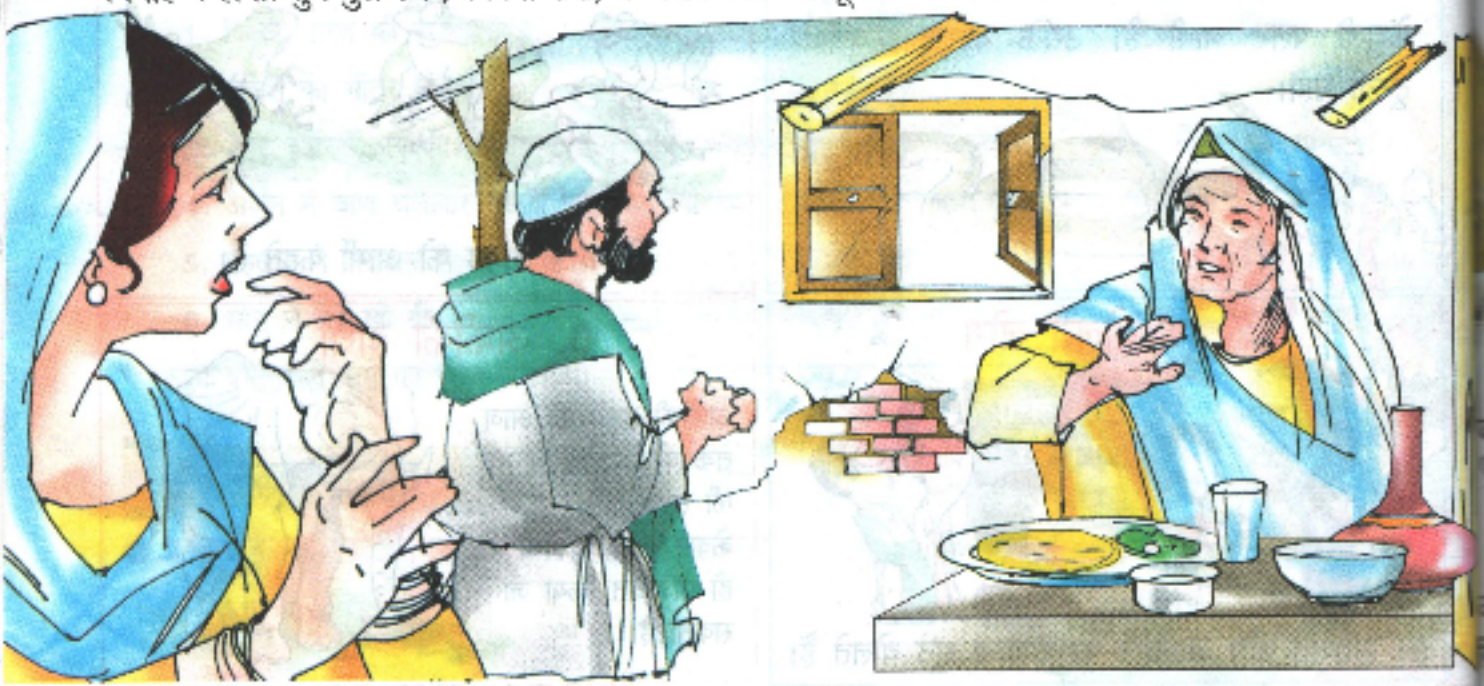

जुम्मन ने धृष्टता के साथ उत्तर दिया, "रुपए क्या यहाँ फलते हैं?" खाला बिगड़ गई। उन्होंने पंचायत करने की धमकी दी। जुम्मन बोले, "हाँ, जरूर पंचायत कर लो। फैसला हो जाय। मुझे भी रात-दिन की यह खटपट पंसद नहीं।"

एक दिन संध्या के समय पेड़ के नीचे पंचायत बैठी। जुम्मन शेख ने पहले से ही सारा प्रबंध कर रखा था। पंच लोग बैठ गए तो बूढ़ी खाला ने उनसे विनती की, "पंचो, आज तीन साल हुए, मैंनें अपनी सारी जायदाद अपने भांजे जुम्मन के नाम लिख दी थी। जुम्मन ने रोटी-कपड़ा देना कबूल किया था। सालभर तो मैंने रो-धोकर इसके साथ काटा, पर अब साथ नहीं जाता। मुझे न पेट की रोटी मिलती है, न तन का कपड़ा। मैं बेसहारा हूँ। तुम लोग जो राह निकाल दो, उसी राह चलूँ। मैं पंचों की बात सिर-माथे चढ़ाऊँगी।"

सरपंच किसे बनाया जाए, इस प्रश्न पर जुम्मन शेख और खालाजान में कुछ कहा-सुनी हो गई। अंत में खाला बोली- "बेटा, पंच न किसी के दोस्त होते है, न किसी के दुश्मन। तुम्हारा किसी पर विश्वास न हो तो जाने दो, अलगू चौधरी को तो मानते हो? लो, मैं उन्हीं को सरपंच मानतीं हूँ।"

जुम्मन शेख आनंद से फूल उठे, परंतु मन के भावों को छिपाकर बोले, "चलो, अलगू चौधरी ही सही।"

अलगू चौधरी सरपंच हुए। उन्होंने कहा, "शेख जुम्मन! हम-तुम पुराने दोस्त हैं, मगर इस समय तुम और बूढ़ी खाला दोनों हमारी निगाह में बराबर हो।"

जुम्मन ने कहा, "खुदा गवाह है, आज तक मैंने खाला जान को कोई तकलीफ नहीं दी।"

अलगू चौधरी ने जुम्मन से जिरह शुरु की। जुम्मन चकित थे कि अलगू को हो क्या गया है। अभी तक यह मेरे साथ बैठे थे। अब इतने प्रश्न मुझसे क्यों पूछते हैं? जुम्मन यह सब सोच ही रहे थे कि अलगू ने फैसला सुनाया, "जुम्मन शेख! पंचों ने इस मामले पर विचार किया। उन्हें यह उचित मालूम होता है कि खालाजान को माहवार खर्च दिया जाय। बस वही हमारा फैसला है। अगर खर्चा देना मंजूर न हो तो रजिस्ट्री रद्द समझी जाए।"

फैसला सुनते ही जुम्मन सन्नाटे में आ गए। अलगू के फैसले की सभी लोग प्रशंसा कर रहे थे। पर इस फैसले ने अलगू और जुम्मन की दोस्ती की जड़ हिला दी। जुम्मन को यह फैसला आठों पहर खटकने लगा। वह इस ताक में थे कि किसी तरह अलगू से बदला लेने का अवसर मिले।

ऐसा अवसर जल्द ही जुम्मन के हाथ आया। अलगू चौधरी बटेसर से बैलों की एक बहुत अच्छी जोड़ी मोल लाए थे। देवयोग से जुम्मन की पंचायत के एक महीने बाद इस जोड़ी का एक बैल मर गया। अब अकेला बैल किस काम का? गाँव में समझू साहू थे। उन्होंने एक महीने में दाम चुकाने का वादा करके चौधरी से बैल खरीद लिया।

समझू साहू ने नया बैल पाया तो लगे रोंदने। न चारे की फिक्र, न पानी की। वह दिन में तीन-तीन, चार-चार, खेपें करने लगे। एक दिन साहूजी ने दूना बोझ लाद दिया। बैल ने जोर लगाया, पर वह आधे रास्ते में ही धरती पर गिर पड़ा। ऐसा गिरा कि फिर न उठा।

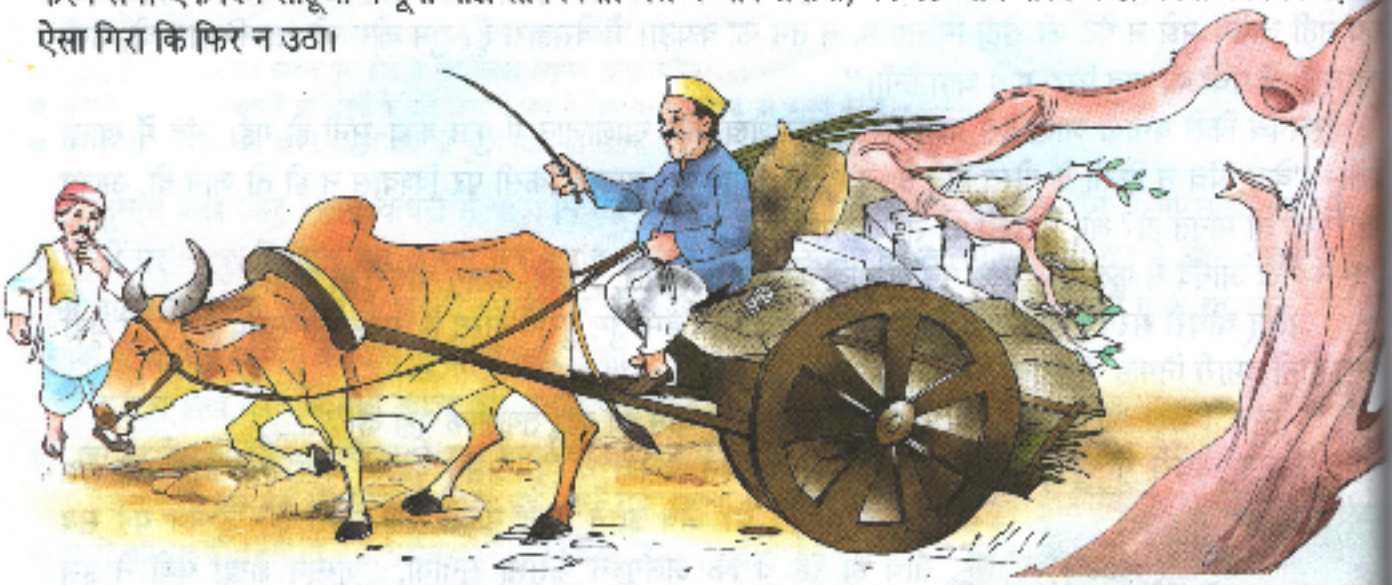

इस घटना को कई महीने बीत गए। अलगू जब बैल का दाम माँगते, तब साहू सहुवाइन दोनों ही झल्ला उठते। कहते "मुर्दा बैल दिया था, उस पर दाम माँगने चले है।"

इसी तरह कई बार झगड़े हुए, पर साहूजी ने बैल का दाम न चुकाया। लोगों ने साहूजी को समझाया, "भाई, पंचायत कर लो। जो कुछ तय हो जाय, उसे स्वीकार कर लो।" साहूजी राजी हो गए तथा अलगू ने भी हामी भर ली। उसी वृक्ष के नीचे पंचायत शुरू हुई। रामधन ने कहा, "चौधरी, बोलो किसको पंच मानते हो?" अलगू ने कहा, "समझू साहू ही चुन लें।"

समझू खड़े हुए और कड़क कर बोले, "मेरी ओर से जुम्मन शेख।" जुम्मन का नाम सुनते ही अलगू का कलेजा 'धक-धक' करने लगा। फिर भी उन्होंने कहा, "ठीक है, मुझे स्वीकार है।"

सरपंच का आसन ग्रहण करते हुए जुम्मन में अपनी जिम्मेदारी का भाव पैदा हुआ। उन्होंने सोचा- "मैं इस समय न्याय के सर्वोच्च आसन पर बैठा हूँ। सत्य से जौ-भर भी टलना मेरे लिए उचित नहीं है।"

पंचों ने दोनों से सवाल-जवाब शुरू किया। बहुत देर तक दोनों अपने-अपने पक्ष का समर्थन करते रहे। अंत में जुम्मन ने फैसला सुनाया, "अलगू चौधरी और समझू साहू। पंचों ने तुम्हारे मामले पर अच्छी तरह विचार किया। समझू को उचित है कि बैल का पूरा दाम दें। जिस समय उन्होंने बैल लिया था, उस समय उसे कोई बीमारी न थी। बैल की मृत्यु केवल इस कारण हुई कि उससे बड़ा कठिन परिश्रम लिया गया और उसके दाने-चारे का प्रबंध नहीं किया गया।"

अलगू चौधरी फूले न समाए, उठ खड़े हुए और जोर से बोले, "पंच परमेश्वर की जय," साथ ही सभी लोगों ने दुहराया, "पंच परमेश्वर की जय।"

थोड़ी देर बाद जुम्मन अलगू के पास आए और उनके गले से लिपट गए। अलगू रोने लगे। इस पानी से दोनों के दिलों का मैल धुल गया। मित्रता की मुरझाई हुई लता फिर हरी हो गई।

– प्रेमचंद

पाठ में प्रयुक्त मुहावरों के अर्थ

मुहर लग जाना = पक्का हो जाना। सिर-माथे चढ़ाना = खुशी से स्वीकार करना। कलेजा धक्-धक् करना = अधिक घबरा जाना। सन्नाटे में आ जाना = चुप रह जाना। दिल का मैल धुल जाना = मन साफ हो जाना।

शब्दार्थ गाढ़ी = पक्की। अटल = पक्का, सदा रहने वाला। निठुर = कठोर, उपेक्षित भाव रखने वाला। गृहस्वामिनी = पत्नी, घर की मालकिन। धृष्टता = बेशरमी, निर्लज्जता, ढिठाई। प्रशंसा = तारीफ। सर्वोच्च = सबसे ऊँचा। जिम्मेदारी भरा। देवयोग = ईश्वर की इच्छा। जौ-भर = तनिक भी।

अभ्यास-कार्य

पाठ से

■ बहुविकल्पीय प्रश्न

(क) सही विकल्प के सामने ✓ लगाइए:

1. जुम्मन शेख और अलगू चौधरी की-
   (अ) साझे की दुकान थी ☐ (ब) साझे की खेती थी ✓ (स) एक बूढ़ी खाला थी ☐
2. 'रुपए क्या यहाँ फलते हैं?' कहा-
   (अ) जुम्मन की खाला ने ☐ (ब) जुम्मन शेख ने ✓ (स) अलगू चौधरी ने ☐
3. अलगू चौधरी ने फैसला दिया-
   (अ) जुम्मन के पक्ष में ☐ (ब) जुम्मन के विरूद्ध ✓ (स) जुम्मन की पत्नी के पक्ष में ☐
4. अलगू चौधरी बैलों की जोड़ी लाए थे-
   (अ) कानपुर से ☐ (ब) रामपुर से ☐ (स) बटेसर से ✓
5. समझू साहू ने पंच माना-
   (अ) अलगू चौधरी को ☐ (ब) जुम्मन शेख को ✓ (स) गाँव के एक बुजुर्ग को ☐

(ख) उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए:

1. जुम्मन की पत्नी खाला को रोटियाँ देने के साथ कड़वी बातें भी सुनाने लगी थी। (खाला/करीमन)
2. खाला ने जुम्मन से शिकायत की। (अलगू चौधरी/जुम्मन)
3. खाला ने जुम्मन को पंचायत करने की धमकी दी। (बेसहारा/पंचायत)
4. समझू साहू ने अलगू चौधरी से बैल खरीदा। (जुम्मन शेख/अलगू चौधरी)
5. समझू साहू ने जुम्मन शेख को अपना पंच चुना। (रामधन/जुम्मन शेख)

(ग) रेखा खींचकर परस्पर संबद्ध वाक्यांशों का सुमेल कीजिए:

1. जुम्मन शेख की	(अ) निबाह न होगा।
2. खाला के पास	(ब) मैं अलग पका खा लूँगी।
3. खाला के निकट संबंधियों में	(स) एक बूढ़ी खाला थी।
4. बेटा, मेरा तुम्हारे साथ	(द) थोड़ी-सी जायदाद थी।
5. तुम मुझे रुपए दे दिया करो	(य) कोई न था।

■ शुद्ध उच्चारण कीजिए :

रजिस्ट्री | जुम्मन | खातिरदारी | सन्नाटा | पंचायत

■ इनके उत्तर लिखिए :

1. जुम्मन की खाला ने अपनी जायदाद जुम्मन के नाम क्यों कर दी थी?
खाला के निकट संबंधियों में से कोई न था इसलिये खाला ने अपनी देख रेख के लिये अपनी जायदाद जुम्मन के नाम कर दी थी।

2. जायदाद की रजिस्ट्री होते ही जुम्मन का व्यवहार बदल गया। इससे जुम्मन के स्वभाव की क्या विशेषता प्रकट होती है?
जायदाद की रजिस्ट्री होते ही जुम्मन का व्यवहार बदल गया। इससे जुम्मन के मतलबी होने का पता चलता है।

3. जुम्मन की खाला के प्रति जुम्मन की पत्नी का व्यवहार कैसा था?
जुम्मन की खाला के प्रति जुम्मन की पत्नी का व्यवहार बहुत बुरा था, वह उन्हें कड़वे वचन बोलती थी।

4. 'मैं अलग पका-खा लूँगी'- खाला ने ऐसा क्यों कहा?
जायदाद की रजिस्ट्री होते ही जुम्मन के व्यवहार में बदलाव आते ही खाला ने मासिक खर्च की मांग करते हुये ये बात की

5. अलगू चौधरी के सरपंच चुने जाने पर जुम्मन को क्या प्रतीत हुआ?
अलगू चौधरी के सरपंच चुने जाने पर जुम्मन आनंद से फूल उठे।

6. फैसला सुनते ही जुम्मन सन्नाटे में क्यों आ गए?
फैसला सुनते ही जुम्मन सन्नाटे में आ गये थे क्योंकि उन्हे अपने मित्र से अपने हक में फैसले की उम्मीद थी।

7. सरपंच का आसन ग्रहण करते हुए जुम्मन में कौन-सा भाव पैदा हुआ?
सरपंच का आसन ग्रहण करते हुये जुम्मन में जिम्मेदारी का भाव पैदा हुआ।

भाषा की बात

(क) शब्दों का उनके अर्थों से सुमेल कीजिए :

1. खातिरदारी	(अ) प्रार्थना
2. तन	(ब) बहस
3. माहवार	(स) शरीर
4. जिरह	(द) आवभगत
5. विनती	(य) मासिक

(ख) मुहावरों का उनके अर्थों से सुमेल कीजिए :

1. कलेजा धक्-धक् करना	(द) अधिक घबरा जाना
2. सिर माथे चढ़ाना	(ब) खुशी से स्वीकार करना
3. मुहर लग जाना	(य) पक्का हो जाना
4. दिल का मैल धुल जाना	(अ) मन साफ हो जाना
5. सन्नाटे में आ जाना	(स) चुप रह जाना

(ग) संज्ञा चुनकर लिखिए :

1. खाला ने जुम्मन से शिकायत की। खाला
2. एक दिन पंचायत बैठी। पंचायत
3. पंचों ने दोनों से सवाल किए। पंचो
4. लोगों ने साहू जी को समझाया। साहू जी
5. अलगू रोने लगा। अलगू

(घ) भाववाचक संज्ञा बनाइए :

1. महान	महानता	2. मूर्ख	मूर्खता	3. एक	एकता
4. निर्धन	निर्धनता	5. हरा	हरियाली	6. सज्जन	सज्जनता
7. सफेद	सफेदी	8. कठिन	कठिनता	9. मित्र	मित्रता
10. चोर	चोरी				

कुछ करने की बात

(क) जुम्मन का अपनी खाला से व्यवहार आपको कैसा लगा? कक्षा को बताइए।

(ख) जुम्मन की पत्नी ने जुम्मन की खाला को कटु शब्द कहे। क्यों?

(ग) यदि आप जुम्मन के स्थान पर होते तो खाला के साथ कैसा व्यवहार करते?

(घ) जुम्मन की खाला ने जब उसे पंचायत में जाने की धमकी दी, तब जुम्मन को उसे किस प्रकार समझाना चाहिए था? अपने शब्दों में लिखिए।